IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय भाषा और हिन्दी

[1]Dr. Madhulata Vyas
[1]Associate Professor
[1]R.T.M. Nagpur University

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल,

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल

– कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र

आज मीडिया की भाषा सबसे तेज भाषा है। इसका अनुकरण ज्यादा होता है , टीवी में लचकदार नवीन शब्दों को चलन में लाने की ज्यादा कोशिश की जाती है। जैसे इन दिनों जब कोरोना वायरस सब जगह फैला हुआ है, उससे सजग रहने के लिए टीवी में उर्दू का शब्द 'ऐतिहात', प्रयोग में आ रहा है सावधानी की जगह , हमें ऐतिहात बरतना चाहिए यह समाचार में सुन रहे है। 'दो फीट की दूरी बनाए रखें', 'भीड़ में ना रहे' ,साथ ही शुद्ध हिंदी का भी प्रयोग हो रहा है जैसे हाथों को 'स्वच्छ' रखें ,'घर में रहें सुरक्षित रहें,' इंग्लिश के शब्द जैसे 'सोशल डिस्टन्स' बनाए रखें, 'स्टे होम' आदि ,इस तरह उर्दू, हिन्दी, इंग्लिश तीन भाषाएँ साथ –साथ बह रही है और जनता भी तीनों भाषाओं को आसानी से समझ रही है, इसका मुख्य कारण क्या हो सकता है, आइए हम जानते है –

- बड़ी से बड़ी बात को कम से कम शब्दों में बोलना
- स्लोगन के रूप में संदेश देना
- सूत्रात्मक वाक्यों का प्रयोग क्योंकि ये छोटे वाक्य आसानी से मस्तिष्क में घर कर लेते है

भाषा में निहित सम्प्रेषणशक्ति ही उसकी प्राणशक्ति होती है सम्प्रेषण का सरल अर्थ होता है संप्रेषण अर्थात सं का अर्थ 'सही तरीके से' 'सही मायने में' और प्रेषण का अर्थ भेजना या प्रेषित करना भाषा शब्द ही नहीं ध्वनि भी है, जब हम अपनी बात दूसरों को समझाते हैं, तब उसमे ध्वनि भी शब्द का अर्थ समझाती है इसमे निहित होता है कहने का अंदाज, काव्य मर्मज्ञ आनंदवर्धन ने तो ध्वनि को ही काव्य की आत्मा माना है। आज हम देखते है कवि सम्मेलन में मंचीय कवि छोटी सी पंक्ति को इस ढंग से पेश करते है कि एक साथ तालियाँ बज उठती है मुंह से वाह वाह निकलती है, हास्य व्यंग्य कविता में तो स्वर और बोलने का अंदाज ही लोगों में अर्थ की संकल्पना को स्पष्ट कर देता है इसलिए ध्वनि भी भाषा की मुख्य घटक मानी जाती है कवि रहीम कहते है 'जहां काम आए सुई क्या करे तलवार'। जब हम कम से कम शब्दों में बड़ी से बड़ी बात को समझा सकते हैं तब फिर शब्दों की अधिकता क्यूँ ?

आज भारत में त्रिभाषा सूत्र त्रिवेणी संगम है जिसमें भाषाई गंगा स्नान करके हम अपने मस्तिष्क के भाषाई कोष को संभाल सकते हैं और हिंदी का सरलता से प्रसार कर सकते हैं इसलिए जब हिंदी प्रान्तों से व्यवहार बनाते हुये चलती है तब वहां के शब्दों को अपनाते हुए आगे बढ़ती है हिन्दी की यही उदारता उसकी व्यावहारिकता को विकसित करती है इसलिए प्रत्येक प्रांत की हिंदी भाषा का स्वरूप अलग होता ळें हिंदी का विकास क्षेत्रीय भाषाओं को जोड़ते हुए आगे बढ़ता है इससे हिंदी की सुंदरता बढ़ जाती है और हम व्याकरण की दृष्टि से हिंदी का व्याकरण मजबूत रखते हैं। जिस क्षेत्र में हिंदी बोली जा रही है वहां के सुंदर बोलचाल के शब्दों को व्यवहारिक बोलों में प्रयोग में लाते हैं। ''भाषा कभी सांप्रदायिक अथवा आंचलिक नहीं होती उदाहरण स्वरूप अल्लाह कृष्ण आदि सांप्रदायिक लगने पर भी उनका अर्थ परमात्मा है और परमात्मा हर धर्म का आराध्य है परमात्मा कभी सांप्रदायिक नहीं होते वैसे ही आंचलिक भाषा क्षेत्रीय भाषा अर्थवाची होने पर भी सार्वजनिक बन जाती है''[1]

आजकल टीवी पर 'फोन पे' कंपनी का एक विज्ञापन आता है, जिसमें एक सामान्य व्यक्ति बिहारी भाषा में अपनी पत्नी को मोबाइल पर कहता है।

पति– "तुम्हरा जन्मदिन है तुम अपने लिए कुछ ले लो"

पत्नी– "पैसा कहा से लायी"

पति– "तुंहरा फोन में डलवाई,फोन पे"[2]

उधर उसकी पत्नी फोन उठाकर देखकर की उसमें रू 5000ध. आ गए हैं वह खुश होकर मुस्कुराती है और संकोचवश अपनी भावनाओं को सास के सामने कैसे व्यक्त करे इसलिए वह अपनी मातृभाषा मलयालम में पति से कहती है "स्नेही कुन्नू" इस शब्द को सुनकर उसका पति असमंजस में पड़ जाता है, क्योंकि उसे कुछ समझ में

नहीं आता की ये क्या कह रही है। दोनों के इस संवाद को एक काम कर रहा मलयालम भाषी व्यक्ति सुनता है और पति पत्नी के संवाद की गैरसमझ को मुस्कुराकर दूर करता है कि आपकी पत्नी आपसे 'आय लव यू' बोल रही है मलयालम में , पति का चेहरा प्रसन्नता से खिल जाता है।

ये केवल विज्ञापन ही नहीं यहाँ भाषायी प्रेम के साथ भारतीय संस्कृति की झलक भी दिखाई देती है, पर जब बात बोलचाल की आती है तब वह लेखन से अलग हो जाती है। लेखन भाषा की संरचनात्मक क्रिया है, और बोली में भाषा की संप्रेषणीयता छिपी होती है। अंतर्जातीय विवाह से ,व्यापार से, फिल्म और मीडिया से, क्षेत्रीय भाषाओं के शब्द इस तरह प्रचलन में आते है अँग्रेजी की जगह हमारी प्रांतीय भाषाओं के शब्द व्यवहार में आए तो अच्छा रहेगा आखिर घी खिचड़ी में ही जाएगा न! भारतीय भाषाओं का विकास होगा और हमें अभिव्यक्ति के लिये विदेशी भाषाओं के शब्द उधार नहीं लेने पड़ेंगे हमारी भाषाएँ समृद्ध होगी , जब विभिन्न भाषाओं में लोगों में आपस में बातचीत होती है, तो मुख्य आधार भाषा हिन्दी ही होती है ,क्योंकि उसका व्याकरण मजबूत है। इस त्रिभाषा सूत्र के बारे में भी काफी टीका टिप्पणी होती है पर जब इसे व्यवहार में देखते हैं तो यह मिलजुल कर संपर्क भाषा हिंदी में एक रोचकता पैदा करती है। जब आपस में सभी प्रांतिय भाषी एक जगह जुडते है तो वे हिन्दी में ही बात करते है। व्याकरण में थोड़ा बहुत फेर बदल हो जाता है लेकिन आशय समझ में आता है और यही हिन्दी भाषा का संपर्क–सौन्दर्य है। "हिन्दी भाषा की यह विशेषता रही है कि वह विभिन्न प्रांतो में अलग–अलग तरीके से बोली जाती है, यानि उसमें व्याकरण की दृष्टि से एकरूपता दिखाई नहीं देती है। हर प्रांत वासी का हिंदी का उच्चारण भी भिन्न तरह का रहा है। यह महावीर प्रसाद द्विवेदी के समय में और भी अधिक था द्य उस समय जो हिन्दी लिखी जा रही थी उसमें एकरूपता नहीं थी ए हिन्दी के लेखक भी व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध लिखा करते थे ए द्विवेदी जी ने हिन्दी भाषा की इस अनस्थिरथा को दूर करने क लिए अपना ऐतिहासिक महत्व का निबंध ''भाषा और व्याकरण'' नवंबर 1905 की सरस्वती पत्रिका में लिखा।''[3] उसका प्रभाव यह रहा की धीरे–धीरे सब लेखक व्याकरण शुद्ध हिन्दी लिखने लगे ।

जो कहते हैं कि दक्षिण भारत में हिंदी बोली समझी नहीं जाती वहां विरोध होता है। मैं इससे सहमत नहीं हूं क्योंकि हम उनके शब्दों को लेकर हिंदी में बातचीत करें तो उन्हें भी अपनापन लगेगा और यह बात केवल दक्षिण भारत से ही नहीं हम अन्य प्रांत जैसे महाराष्ट्र, गुजरात, ओड़ीसा, कोलकात जहां हिंदी भाषा कठिन मानी जाती है वहां पर उसी भाषा के शब्द लेकर बातचीत करने से आत्मीयता का भाव पनपेगा ,बाजार के बीच में या सार्वजनिक स्थल जैसे की बस स्थानक, रेल्वे स्टेशन, विमानतल,अस्पताल, इत्यादि जो भाषा चलती है वह संपर्क भाषा हिन्दी होती है आपस में संवाद साधने क लिए मिलीजुली हिन्दी का प्रयोग करते है ''वस्तुतः किसी भी भाषा का प्रचार उसकी उपादेयता पर व्यवहारिकता पर निर्भर होता है अंग्रेजी को आगे बढ़ाने के लिए उसे रोजी–रोटी से जोड़ दिया अंग्रेजी ज्ञान पाकर लोग नौकरियां प्राप्त करने लगे और इस तरह नौकरियों के कारण लोगों ने हिंदी को अपनाकर अंग्रेजी में काम शुरू किया, लोकमान्य तिलक अपने जीवन के अंत तक यही कहते रहे कि भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी ही होगी अंग्रेजी वह स्थान नहीं पा सकती। दक्षिण में हिंदी के इस प्रचार को उनके ऊपर हिंदी का आक्रमण बताया क्योंकि यह संस्थाएं बाहर से आई थी। दक्षिण के इस मानसिकता को समझ कर जब वही के हिंदी प्रेमियों ने ''दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा'' की स्थापना मद्रास में की तो यह सभा अपने कार्य में सर्वाधिक सफल रही। दक्षिण में हिंदी के प्रचार का काम हिंदी भाषा के प्रति हिंदी फिल्मों ने किया दक्षिण के फिल्म निर्माता भी हिंदी फिल्मों के निर्माण में रुचि लेने लगे और इस तरह हिंदी लोकप्रिय होने लगी।[4]

हिंदी उत्तर प्रदेश की भाषा है, यह कहकर उपेक्षा होती है। जबकि यह बात बिल्कुल गलत है, हिंदी सारी भाषाओं के साथ न्याय करती है। संपर्क भाषा के रूप में इसमें अलग–अलग शब्द और भाषा शैली का समावेश है हर राज्य की अपनी एक अलग हिंदी बोलचाल की भाषा बनती है उसका स्वरूप अलग होता है उत्तर प्रदेश में अवधि एमगधी, बघेलीए बुन्देली, ब्रज भाषा, भोजपुरीए मैथली, आदि भाषाएं आती है जिनका हिन्द स्वरूप अलग है। भाषा की राजनीति का व्यूह तैयार होता है और हिंदी, जो सबको जोड़ कर चलने वाली भाषा हैं वह इस व्यूह में फँस कर रह जाती है। इसे इस बंधन से, गैर समझ से दूर रखना होगा कि हिंदी उत्तर भारत की ही भाषा है।

हमारी राष्ट्रीय एकता को दर्शाने वाली हिन्दी भाषा का सभी क्षेत्रों में विकास होना जरूरी है इसके लिए हम तत्पर रहें ये हम सभी का भारतीय नागरिकता के नाते नैतिक कर्तव्य भी है। हमें एक भाषा–हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित करना है। सभी भाषाओं के शब्द सौंदर्य को हिन्दी अपने में समेटे हुए है। हिन्दी भाषा प्रसारित होने से क्षेत्रीय भाषाएँ बाधित नहीं होती। जब हम भोजन में सभी प्रांत के व्यंजन में रुचि रखते हैं, तो सभी भाषाओं के स्वर और व्यंजन को क्यों न स्वीकार करें? सभी भारतीय भाषाओं के प्रति अपनत्व इसी प्रकार से जागृत होगा और हिंदी अन्य भाषाओं के साथ जुड़कर आगे बढ़ेगी, क्षेत्रीय भाषा कभी भी हिंदी को आगे बढ़ने से नहीं रोकेगी क्योंकि उन्हें मालूम होगा इसमें हमारे शब्दों की भी झलक है, जैसे की यदि कोई चेहरा हमें अपनों से मिलता हुआ दिखाई दे, तो हम तुरंत उससे परिचय करते हैं इसी तरह जब हिंदी भाषा में क्षेत्रीय भाषाओं के शब्द रहेंगे तो हिंदी भाषा से दुराव विभेद कम हो जाएगा और सभी आसानी से हिंदी को अपनाएंगे।

अंत में कैफी आज़मी के शब्दों में हिन्दी के लिए कहना चाहूंगी –

''हम बचाएंगे, सजाएँगे, सवारेंगे तुझे

हर मिटे नक्श को चमका के उभारेंगे तुझे।''

संदर्भः

1ए भारतीय भाषाएं और राष्ट्रीय अस्मिता, संपादक डॉ राम चरण गौड पृष्ठ संख्या 14, हिंदी अकादमी दिल्ली प्रबंध संस्कारण २००१ दिल्ली ११०००७

2ए फोन पे विज्ञापन - https://www.youtube.com/watch?v=_andnIwLKDk

3ए महावीर प्रसाद द्विवेदी रचना संचयन, संपादक भारत यायावर, पृष्ठ संख्या 32, हिन्दी अकादमी दिल्ली, तृतीय संस्करण 2010, ISBN: 81-260-2059-8

4ए साहित्यकार का सत्य, लेखक शिवचंद्र नागर, पृष्ठ संख्या 145, प्रेरणा प्रकाशन मुरादाबाद 2440 01 प्रकाशन वर्ष 2002 उत्तर प्रदेश भारत